International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 03-03-2021, Accepted: 04-04-2021, Published: 14-05-2021
Volume 7, Issue 3, 2021, Page No. 11-17

मृदुला गर्ग के उपन्यासों में सामाजिक स्तर भेद और भाषा वैविध्य

के. कांचना

उच्च शिक्षा और शोध संस्थान दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद, तेलंगाना, भारत

सारांश

मनुष्य ने एक-दूसरे से संपर्क करने के लिए भाषा का प्रयोग किया है । मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते वह एक-दूसरे के संपर्क में आता ही है । वह अपने बौद्धिक विचारों, भावनाओं, विचार-विमर्शों की अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से करता है । यह सब मनुष्य के सामाजिक स्तर भेद के आधार पर होता है । समाज में कई प्रकार के स्तर भेद देखने को मिलते हैं जैसे आर्थिक वर्ग के आधार पर सामाजिक स्तर भेद इसके अंतर्गत उच्च, मध्य और निम्न वर्गों को देखा जा सकता है । शिक्षा के आधार पर सामाजिक स्तर भेद उच्च शिक्षित, अर्ध शिक्षित और अशिक्षित । व्यवसाय के आधार पर भाषा वैविध्य और पद के आधार पर भाषा वैविध्य ।

भारतीय समाज में शिक्षित और अशिक्षित लोगों की भाषा में भेद दिखाई देता है । वर्तमान समय में शिक्षित लोगों पर अंग्रेजी भाषा का प्रभाव अधिक नजर आता है। इसी कारण समाज के शिक्षित लोगों में द्विभाषिकता का अधिक प्रयोग हो रहा है । उसी प्रकार अशिक्षित लोग अक्सर इन बातों से उपेक्षित रहते हैं । किन्तु इस वर्ग के लोगों में प्रादेशिक बोलियों का प्रभाव ज्यादा दिखाई देता है । इन भेदों में भाषा और समाज का परस्पर अंतः संबंध होता है । समाज और भाषा दोनों एक-दूसरे निर्भर करते हैं । इसलिए समाजशास्त्री भी समाज की गति और दिशा मापदंड के तौर पर भाषा को रखना उच्चित समजते हैं ।

मूलशब्द: सामाजिक स्तर भेद, भाषा वैविद्य, भाषा, बोलियाँ आदि ।

प्रस्तावना

भारतीय समाज वर्ण, जातियों, वर्गों तथा लिंग आदि के आधार पर विभाजित है । इसका प्रभाव भाषिक तौर पर समाज में देखने को मिलता है । सामाजिक स्तर पर हर व्यक्ति अपने संप्रेषण के द्वारा ही अपने विचार-विमर्श को एक-दूसरें तक पहुंचाता है । समाज में रहने वाला हर व्यक्ति का संबंध भाषा से जुड़ा रहता है । उदहारण के लिए यदि किसी व्यक्ति को कोई आवश्यक सूचना संपर्क के माध्यम से पहुँचाना हो तो उसे भाषा का ज्ञान होना भी बहुत जुरुरी होता है। समाज के भीतर वर्गों की व्यवस्था ही सामाजिक स्तर भेद का प्रमुख कारण है। सामाजिक स्तर भेद के अनुसार समाज में हर भाषा की अपनी लिपि तथा शैलियाँ पायी जाती हैं। उसी तरह एक ही समाज में भिन्न-भिन्न शैलियाँ भी दिखाई पड़ती हैं ।

भारत में भिन्न-भिन्न भाषाएँ बोली जाती हैं और विभिन्न संस्कृतियों का समावेशी देश भी माना जाता है । हिंदी भाषा समुदाय के आधार पर हर एक भाषा का अपना-अपना व्याकरण तथा शब्दों

में अंतर दिखलाई पड़ता है । भारतीय समाज में वर्ग-व्यवस्था बहुत पहले से चली आ रही है । इसी आधार पर भाषा में भी स्तर / कोड का अंतर दिखाई पड़ता है । भाषा प्रतीकों का एक व्यवस्थित रूप है । चाम्स्की के अनुसार भाषा नितांत अमूर्त एवं सार्वभौमिक क्षमता है जिसमें भाषा की विविध शैलियों को विकृत तथा स्खलित नाम से अभिहित किया गया है । समाज और भाषा की विविध शैलियाँ आदर्श रूप में सामने आती है। वैविध्य से तात्पर्य है विविधता । भाषा समाज में विविध रूपों में प्रयुक्त होती है । संभवतः संसार की ऐसी कोई भाषा हो जो सिर्फ़ एक निश्चित रूप में प्रकट होती होगी । भाषा वैविध्य को निम्न कहावत के माध्यम से समझ सकते हैं - 'चार कोस पर बदले पानी आठ कोस पर बदले बानी।' यानी भौतिक दूरी के कारण भाषा के रूप में परिवर्तन होता है और इसे समाज भाषाविज्ञान का बुनियादी सिद्धांत भी कह सकते है। भाषा में वैविध्य के प्रमुख दो आधार हैं - क्षेत्रीय बोलियाँ और आयु, पेशा, और लिंग आदि विभिन्न वर्गों के भाषा व्यवहार के कारण उत्पन्न सामाजिक बोलियाँ । इस प्रकार हर व्यक्ति की भाषा में उसकी क्षेत्रीयता, लिंग, पेशा, आयु, आदि कारकों से हर दूसरे व्यक्ति से भिन्न भाषा रूप दिखाई देता है ।

भाषाविज्ञान और भाषा वैविध्य में अंतर यह है कि भाषाविज्ञान भाषा के एक कल्पित तथा मानक रूप का वर्णन किया जाता है जबकि भाषा की विविधता को एक ही व्याकरण में समेटना व्याकरण के लिए असंभव है । भाषा वैविध्य का कारण प्रायः समाज के स्तर-भेद जैसे उच्च, मध्य, निम्न वर्ग, जाति-भेद और लिंग-भेद आदि होते हैं । हिंदी भाषा में भी अनेक बोलियों का समावेश है । हिंदी भाषा बहुत विस्तृत भूभाग में बोली जाती है । विशेष तौर पर मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, हरियाणा, दिल्ली आदि राज्यों की गणना हिंदी प्रदेशों में की जाती है । भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इसे पाँच उपभाषाओं में विभाजित किया जाता है 1. पश्चिमी हिंदी, 2. पूर्वी हिंदी 3. राजस्थानी हिंदी 4. बिहारी हिंदी और 5. पहाड़ी हिंदी हैं । इन पाँच उपभाषाओं में विभिन्न प्रकार की बोलियाँ भी सम्मिलित हैं । राजस्थानी हिंदी में मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती और मालवी हैं। पश्चिमी में खड़ीबोली, बाँगरू, ब्रज भाषा, कन्नौजी और बुन्देली हैं । पूर्वी हिंदी में अवधी, बघेली और छत्तीसगढ़ी हैं ।बिहारी हिंदी में भोजपुरी, मैथिली और मगही बोलियाँ हैं । पहाड़ी हिंदी में नेपाली,कुमायूंनी और गढ़वाली हैं । उपर्युक्त उप भाषाओं के माध्यम से हिंदी में इतनी सारी बोलियाँ पाई गई है और हर क्षेत्र में अपनी बोली का विशेष महत्व होता है । इन बोलियों का प्रभाव हिंदी भाषा पर अधिक दिखाई देता है । भाषा की विविधता के अलावा भी भाषा के विभिन्न रूपों को इस प्रकार देखा जा सकता है - मानक भाषा, उप भाषा, बोली, उप बोली, अपभाषा, कूट भाषा, कृत्रिमभाषा, अभिजात भाषा, मिश्रित भाषा, पिजिन, क्रिऑल, राष्ट्रभाषा, राज भाषा, संपर्क भाषा आदि।

आर्थिक वर्ग के आधार पर भाषा वैविध्य

सामाजिक संरचना समाज के बाह्य याने भौतिक स्वरूप को दर्शाती है । जिसमें वर्ग, जाति, पेशा, लिंग आदि का समावेश होता है । समाज में रहने वाला हर एक व्यक्ति सामाजिक प्राणी होने के नाते वह किसी न किसी व्यक्ति से संबंध रखता है जैसे- एक व्यावसायिक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से अपना व्यवहार चलाना, भावनात्मक आदि प्रकार की निर्भरता अथवा समूहों, संगठनों, संस्थानों आदि संरचनात्मक इकाईयों का निर्माण करते हैं जिसके जरिये समाज अच्छे तरीके से काम करता है । सामाजिक संरचा को परिभाषित करते हुए मैकाईवर कहते हैं-" सामूहीकरण के

विभिन्न ढंग इकट्ठे होकर सामाजिक संरचना के जटिल प्रतिमान की रचना करते हैं । सामाजिक संरचना के विश्लेषण से सामाजिक प्राणियों के विभिन्न दृष्टि कोनों एवं हितों की भूमिका का पता चलता है ।”[1] इस आधार पर कहा जा सकता है कि मनुष्य के एक-दूसरे से संबंध संरचनाओं की प्रतिमानित व्यवस्था सामाजिक संरचना है ।

हर एक साहित्यिक रचनाकार अपनी रचनाओं में इन्हीं घटकों के विशिष्टताओं के अनुकूल समाज के स्वरूप को बुनता है । उदहारण के तौर पर किसी भी रचना के पात्र के संबंध में बात की जाय तो पात्र जिस भी जाति, लिंग, धर्म, पेशा, वर्ग आदि का हो उस पात्र के अनुकूल भाषा झलकती हुई दिखाई देती है । पात्र के अनुकूल ही रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, भाषा आदि का सृजन किया जाता है । ठीक इसी तरह कोई भी रचनाकार अपनी रचनाओं में उच्च, मध्य और निम्न वर्ग का चित्रण करता है तो उसके अनुरूप ही भाषा का प्रयोग भी करता है । मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में निन्म बिंदुओं में भाषा के प्रयोग को देखा जा सकता है ।

उच्च वर्ग की भाषा

हमारा समाज विभिन्न वर्गों में विभाजित है उच्च वर्ग का अर्थ यह है-“व्यक्तियों का वह वर्ग या दल जो उत्कृष्ट बौद्धिक या सामाजिक या आर्थिक स्थिति का आनंद ले रहा हो या जिनकी बौद्धिक या सामाजिक या आर्थिक स्थिति उत्कृष्ट हो ।”[2] याने जो लोग बौद्धिक तौर पर उत्कृष्ट के साथ-साथ आर्थिक रूप से संपन्न हो वे सब उच्च वर्ग के अंतर्गत आ जाते हैं । वे लोग समाज के अन्य वर्ग की तुलना में अपने जीवन को विलसित जीवन शैली में व्यतीत करते हैं जैसे रहने के लिए बड़ा बंगला, गाडी आदि । इस वर्ग के अंतर्गत विभिन्न पेशाओं के लोग डॉक्टर, वकील, सरकारी अधिकारी, नेता और प्रतिष्ठित व्यक्ति आदि सम्मिलित हो जाते हैं । इस वर्ग की भाषा की विशेषता यह नजर अति है कि उनमें कोड मिश्रित होते हैं । यह वर्ग अपने सामान वर्ग के लोगों के साथ भिन्न शैली में बात करता है । मध्य और निम्न वर्ग की तुलना में उच्च वर्ग के पारिवारिक वार्तालाप में मर्यादा पूर्वक भाषा का प्रयोग किया जाता है । यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि “मानव समाज का आतंरिक भेद उनकी भाषाओं से प्रकट होता है क्योंकि हम एक भाषी समुदाय के सदस्य होने के नाते यह जानते हैं कि विभिन्न सामाजिक वर्ग विभिन्न रूप से अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं । यह सर्वमान्य है कि भौगोलिक सीमाओं से जिस प्रकार क्षेत्रीय बोलियों का निर्धारण किया जाता है और दो क्षेत्रीय बोलियों में जितनी भौगोलिक दूरी होगी, भाषा की दृष्टि से वह उतनी ही असमान होगी, इस प्रकार भाषा के सामाजिक प्रभेद सामाजिक सीमाओं एवं सामाजिक अंतर से पहचाने जाएंगे । भाषा सामाजिक वर्ग, आयु, जाति, धर्म, शिक्षा आदि विभिन्न पहलुओं द्वारा नियंत्रित होती है”[3] स्पष्ट है कि सामजिक संरचना के लिए भाषा एक माध्यम के रूप में काम करती है वहीं भाषा वैविध्य जानने के लिए सामाजिक सामाजिक व्यवस्था को जानना आवश्यक है । मृदुला गर्ग ने अपने कथा साहित्य में इस वर्ग का चित्रण किया है ।

‘उसके हिस्से की धूप’ उपन्यास का पात्र ‘जितेन’ एक पेपर की फैक्ट्री में मनेजर के पद पर तैनात है । वह हमेशा अपने कार्य में व्यस्त रहता है । एक दिन मनीषा को छोड़ने मधुकर जब जितेन के घर पहुँच जाता है तब दोनों आपस में बहेस करने लगते हैं । तब जितेन मधुकर से एक श्रमिक की तुलना में आप भी तनख्वाह ज्यादा पाते हैं-“एक श्रमिक के मुकाबले मोटी तनख्वाह आप भी पाते हैं मिस्टर नागपाल, पर उसके मुकाबले कर्त्ता नहीं बन सकते,” कह कर उसने सहज भाव से पूछा, “क्या लेंगे, ह्वीस्की या बियर या बियर ?”[4] यहाँ

'मिस्टर नागपाल', ' ह्वीस्की या बियर' जैसे शब्द उच्च वर्ग के लोगों के भाषा में अधिक पाये जाते हैं । इस प्रकार यहाँ कोड मिश्रण भाषा साफ-साफ नजर आती है ।

'वंशज' उपन्यास का पात्र 'शुक्ला जी' उच्च वर्ग का नेतृत्व करते हैं । वे अंग्रेजी अदालत के जानेमाने जज हैं । विदेश में शिक्षा करने के दौरान किसी अंग्रेजी महिला के प्रति आकर्षित होते हैं तो उनकी उच्च वर्गीय मानसिकता सामने आती है । शुक्ला साहब एक दिन शाम साढ़े पांच बजे कोर्ट से घर लौटते है तब अपनी बेटी से कुछ इस प्रकार पूछते हैं - "रेवा वॉर एंड पीस पढ़ने में तल्लीन है । उसे समझने के प्रयत्न में, वह माथे पर शिकन डाले इतनी तन्मयता से पढ़ रही थी कि उनके पैरों की आहट भी नहीं सुनी ।

"क्या कर रही हो?" स्नेह-गद्गद स्वर में उन्होंने पूछा ।

"डैडी?" चौंककर उसने सिर उठाया, कहा, "पढ़ रही हूँ ।"

"क्या ?" वॉर एंड पीस ?" शुक्ला साहब किंचित् मुस्कुराये ।

"हां, डैडी ।"

"कैसी लग रही है ?"[5] पढ़े-लिखे परिवार की भाषा में अंग्रेजी के शब्द बोलते समय सहज रूप से आ जाते हैं । इसे कोड मिश्रण कह सकते है । यहाँ पर पिता और बेटी के बीच चलने वाला संवाद है । पिता के प्रति बेटी आदर युक्त भाषा का प्रयोग करती हुई नजर आती है ।

'वंशज' उपन्यास में शुक्ला साहब एक वकील है और अपने बगीचे में लगे पीली चमेली की बेल के पास जाकर खड़े होकर देर तक उस चमेली की ताज़ा खुशबू सूंघने का प्रयत्न करते हैं । पौधे पर लगे उस बेतरतीब फूलों के धकापेल गुच्छों को देखकर माली से कहते हैं -

"देखो, उन्होंने माली को आवाज़ लगाकर कहा, "इन फूलों का भार बहुत ज़्यादा हो गया है, इनमे से कुछ छांट दो ।"

"छांट दूं ?" माली ने अचंभितहोकर दुहराया ।"

"हां, क़रीब चौथाई छांट दो ।"

"जी," माली ने संभलकर पूछा, "उन फूलों को बैठक में लगा दूं?"

"नहीं-नहीं," कहकर शुक्ला साहब दो क़दम पीछे हट गये ।"

"कलेक्टर साहब के यहां दे आना," उन्होंने कहा, "और देखो, जब हम टेनिस खेलने क्लब चले जायें तब काटना ।"[6]

उपर्युक्त उद्धरण से यह स्पष्ठ होता है कि उच्च वर्ग के लोग हमेशा सबसे आदरयुक्त शब्दों,वाक्यों में बात करते हैं । फिर चाहे वे उनके परिवार के सदस्य हो, या नौकर । उच्च वर्ग के लोग अधिक शिक्षित होने के कारण उनकी भाषा में कोड मिश्रण तथा कोड परिवर्तन देखने को मिलता है । उच्च वर्ग की भाषा की मुख्य विशेषता कोड़मिश्रण है । क्योंकि वे शिक्षा और व्यवसाय जैसे कारणों से जुड़े होते हैं इसीलिए उनकी भाषा भी कोडमिश्रित होती है । उच्च वर्ग अपने समान वर्ग के लोगों से भिन्न शैली में तथा मध्यम और निम्न वर्ग से भिन्न शैली में बात करता है । उच्च वर्ग अपने पारिवारिक जीवन में भी मर्यादा पूर्वक भाषा का ध्यान रखते हुए व्यवहार करता है । मृदुला गर्ग ने भी अपने उपन्यासों में उच्च वर्ग की भाषा को इस प्रकार दिखाया है । 'वंशज' उपन्यास में सुधीर अपने पिता शुक्ला साहब से पैसे लेकर दवाइयों की फैक्टरी लगाना चाहता है । लेकिन शुक्ला साहब सुधीर को असिस्टेंट मैनेजर की नौकरी दिलाना चाहते हैं । इसी सिलसिले में सविता और सुधीर के बीच वार्तालाप चलती है -

"अरे हां, डैडी कह रहे थे, यह साल पूरा होते ही आप असिस्टेंट मैनेजर हो जायेंगे ।"

"उनकी मिल है क्या"?

"उनसे आपके मैनेजिंग डायरेक्टर ने ख़ुद कहा है । "

"किसने ? मिस्टर मंडेलिया ने ?"

“हां ।”

“क्यों? मेरा जिक्र उनसे कैसे आया ?”

“वह किसी काम के लिए अपने डैडी के पास आये थे ।”

“वाह ! तो डैडी ने अपना काम बतला दिया । क्या खूब !” [7] प्रस्तुत उद्धरण में सविता अपने पति के लिए आदरयुक्त शब्द प्रयुक्त करना स्वाभाविक है। उच्च वर्ग के पति पत्नी का वार्तालाप भी सम्मानजनक भाषा से युक्त होता है । यहाँ कोड़मिश्रण तथा उच्च वर्गीय भाषा का प्रयोग देखने को मिलता है ।

मध्य वर्ग की भाषा

भारत में आधुनिक औद्योगों की स्थापना एवं औद्योगिक बुर्जुआ वर्ग के उदय के कई दशक पहले ही आधुनिक बुद्धिजीवी वर्ग का उदय हो चुका था । माध्यम वर्ग पूँजीवाद और औद्योगिकीकरण के विस्तार के साथ-साथ विस्तृत होता समाज का बहुत ही व्यापक, संवेदनशील, मानसिक एवं शारीरिक श्रम करने वाला शिक्षित एवं सघर्षशील जीवन जीने वाला वर्ग है । यह वर्ग उच्च वर्ग की जो भी बुराईयों का खंडन कर निम्न वर्ग के प्रति संवेदनशीलता रखता है । यह सारी बातें उसकी भाषा को विशिष्ट बनाती है । “मध्य वर्ग के परिवार में बालक जिस समय भाषा का प्रयोग करता है उसकी माँ तुरंत उसकी भाषा का विस्तार करती है और इस प्रकार बालक को मान की भाषा का अनुकरण करके अपनी भाषा को सुदृढ़ और विस्तृत करने का अवसर और शिक्षा मिलती है । भाषा के इन विभिन्न प्रकारों को बर्नस्टीन ने पब्लिक और फार्मल नाम दिए थे । ‘पब्लिक’ का अर्थ अनौपचारिक तथा आत्मीयता से लिया जा सकता है । जिनका उपयोग निम्न श्रमिक वर्ग और मध्यवर्ग दोनों ही करते हैं । इन शब्दों के स्थान पर बर्नस्टीन ने बाद में ‘रेस्ट्रीक्टेड’ या ‘सिमित कोड’ कहा है । ‘फार्मल’ या व्यापक कोड का प्रयोग केवल मध्य वर्ग के लोग करते हैं ।”[8] कोई भी बालक अपने माँ द्वारा प्रयोग की गई भाषा का अनुकरण कर सीखता है और जिसे ही उसके भाषा का विस्तार होता है । मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में समाज के इस संरचनात्मक स्वरूप का सर्वाधिक चित्रण हुआ है । ‘उसके हिस्से की धूप’ उपन्यास में ‘मधुकर’ तथा ‘मनीषा’ मध्यवर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं । यहाँ उच्च वर्ग का पात्र जितेन और मध्यवर्ग का पात्र मधुकर के बीच पूंजीपतियों को लेकर बहस चलती है तो जितेन से मधुकर कहता है-“जार्गन आप लोग भी कम नहीं बोलते,” मधुकर अब भी क्रुद्ध था, “किसी मैनेजर के पास चले जाइए, वह धड़ाधड़ बोलता चला जायेगा, मैनजमेंट बाई, ओब्जेक्टिव्स, ऑपरेशन रिसर्च, टाइम एंड मोशन स्टडी, जाने क्या-क्या । सब विदेशों से चुराई लफ्फाजी! मैनेजर बनने के लिए उन अमीरजादों ने तालीम अमेरिका में जो पायी होती है ।” यह सब मधुकर आक्रोश में आकर कहता है । इस उद्धरण से यह स्पष्ट होता है कि विदेश में पायी गई शिक्षा को नकारा जाता है साथ ही यहाँ पर अधिकतर अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है जैसे- मैनेजर, मैनजमेंट बाई, ओब्जेक्टिव्स, ऑपरेशन रिसर्च, टाइम एंड मोशन स्टडी आदि । इस प्रकार की भाषा को कोड मिश्रण की भाषा भी कह सकते हैं । जितेन मैनेजर और मधुकर एक अर्थशास्त्र का प्रोफ़ेसर हैं वे सन्दर्भ के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग करते हैं। यह पर अधिकतर शब्द अर्थशास्त्र और प्रबंधन से संबंधित आये हैं।

निम्न वर्ग की भाषा

भारतीय समाज की आर्थिक संरचना के आधार पर समाज को देखा जाए तो निम्न वर्ग में वह लोग आते हैं जिनका समाज में शोषण सर्वाधिक हुआ हो। वे अपना जीविकोपार्जन मेहनत से करते हैं । इस वर्ग में अधिकतर लोग शारीरिक श्रम

करनेवाले होते हैं । ऐसे लोग जो आर्थिक और सामाजिक तौर पर पिछड़े वे सब इस वर्ग के अंतर्गत आ जाते हैं। भारतीय समाज में एक तरफ उत्पादन के साधनों और पूँजी पर पर अपना पूरा वर्चस्व रखने वला उच्च वर्ग है तो दूसरी ओर श्रमिक वर्ग है जो उत्पादन करने के बावजूद भी उसका स्वामी नहीं है और वह अपने श्रम के आधार जीवन यापन करता है । यह वर्ग उच्च और निम्न वर्ग के बीच द्वंदात्मक संबंध में जीता है । निम्न वर्ग के लोगों को जीवन यापन के लिए हर समय संगर्ष करना पड़ता है । यह संघर्ष उसकी भाषा में भी परिवर्तन का आधार बनता है । इस विचार में पॉलस्टन कहते है- संघर्ष करने वाला वर्ग वाला यह वर्ग एक सीमा तक ही द्विभाषी बनता है । उनका मातृभाषा अनुरक्षण इस बात पर निर्भर करता है कि वे किस मात्रा में आदिवासी समुदाय का प्रतिरोध करता है ।[8]" संघर्ष करने वाला वर्ग परिस्थितियों के अनुसार बदलाव लाता है । इस वर्ग की भाषा अपने स्तर की होती है जिसका चित्रन मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में हुआ है ।

'वंशज' उपन्यास में सुधीर एक उच्च वर्ग का पात्र है और साईस एक निम्न वर्ग का पात्र है इन दोनों के बीच चलनेवाले बातचीत को इस प्रकार देख सकते है-

"साहब के पास तो नहीं गये थे ?" उसने उत्सुकता से पूछा ।

"नहीं नहीं छोटे साहब," साईस ने कान छूकर कहा, उन्हें पता लगेगा तो ग़जब हो जायेगा ।"

"उन्हें बतलाने की जरूरत नहीं है ।"

"जी । पर वे पूछेंगे, इतनी देर कैसे हुई तो क्या कहेंगे? आपको चोटें भी तो आयी लगती हैं," साईस ने उसकी पट्टियाँ देखकर कहा ।

"कह देंगे, फुटबाल खेलने चोट लग गयी, पट्टी करवाने में देर हो गयी ।"

"ठीक है, छोटे साहब ।"

"चलो अब । तुम्हीं चलाओ," कह सुधीर बग्घी में बैठ गया ।

"एक बात कहूँ ?" कुछ रुककर साईस बोला ।

"क्या है ?"

"छोटे साहब, आपने किया बहुत बुरा । घोड़ी को बिलकुल आदत नहीं है ।"

"ठीक है, तुम अपना लेक्चर अपने पास रखो । मुझे क्या पता था, एकदम से बिगड़ उठेगी ।"

"बड़े साहब ने कभी फूल की छड़ी से भी नहीं हुआ," साईस ने उलाहना दिया ।

"तो मैंने कौन से हंटर जमा दिये? छुआ भर था ।

"बहुत नाजुक घोड़ी है । साहब कहते हैं, किसी अंग्रेज लड़की से कम नहीं है।" [9]

अंग्रेजो के शासन काल के दौर में घोड़े का रख रखाव करने वाला व्यक्ति हुआ करता था उसे ही साईस कहते है । शुक्ल साहब के पास उनके घोड़ों की देख-रेक करने के एक व्यक्ति काम करता था । सुधीर और साईस के बीच चलने वाले इस संवाद में एक निम्न स्तर पर नौकरी करनेवाला व्यक्ति अपने मालिक के साथ किस तरह बात करता है जिसे देख सकते हैं । एक व्यक्ति निम्न स्तर पर काम करते हुए भी अपने मालिक के साथ कितनी विनम्र भाषा का प्रयोग करता है । साईस के भाषा में आदर, कोमल, विनम्र आदि भाव दिखाई देते हैं ।

निष्कर्ष

भाषा के बिना मनुष्य एक-दूसरे के बीच संपर्क नहीं कर पाता है । याने भाषा एक ऐसा माध्यम है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति के साथ संपर्क की करवाती है । भाषा के बिना समाज की कल्पना करना बहुत कठिन कार्य है । यह सामजिक वस्तु है ऐसा समझा जाता है कि माता-पिता के द्वारा पैतृक संपत्ति के रूप में पुत्र को प्राप्त होती है । लेकिन यह सत्य कल्पना नहीं है वास्तविक तौर पर देखा जाए तो भाषा सीखी

जाती है । वह सामाजिक संपत्ति है। इसलिए भाषा पैतृक नहीं होती है । शिशु अपने माता अपने माता पिता की भाषा इसलिए सीख लेता है कि उसका बचपन उन्ही के परिवेश में व्यतीत होता है । माता-पिता के भाषा समाज में पलने के कारण ही वह उनकी भाषा को सीख लेता है । इसलिए हमें भ्रम होता है कि कोई भी बच्चा अपने माता-पिता के द्वारा ही भाषा सीख लेता है। जहाँ माता-पिता भिन्न भाषा भाषी होने पर उनका बच्चा दोनों की भाषा सीख लेता है । वैसे हर एक व्यक्ति अपने परिवार से ही भाषा सीखने की शुरुआत करता है । वह धीरे-धीरे समाज के साथ जुड़ने से समाज के नियम-कानून, सामाजिक संरचना, सामाजिक व्यवस्था और पारिवारिक व्यवस्था के संबंध यह सारे उस पर प्रभाव डालते हैं । समाज की सामाजिक संरचना में भी स्तर भेद हैं जिसके चलते समाज में भाषा प्रयोग की भिन्नता उभर कर सामने आती है । समाज अनेक वर्गों में विभाजित है जैसे उच्च वर्ग, मध्य वर्ग और निम्न वर्ग इन सारे वर्गों की भाषा में प्रयोग के तौर भिन्नता नजर आती है । समाज में भाषा वैविध्य का कारण शिक्षा भी है । उच्च शिक्षित मनुष्य पुस्तकीय ज्ञान विद्वजनों के भाषणों से प्रभावित होता है। पुस्तकीय ज्ञान में भी विशेषतः साहित्यिक भाषा का अधिक प्रयोग होता है । उच्च शिक्षित लोगों में प्रोफ़ेसर, डॉक्टर, वकील, इंजीनियर आदि आते हैं जिनका चित्रण मृदुला के कथा साहित्य में हुआ है ।

संदर्भ सूची

1. समाजशास्त्र विद्याभूषण, डी.आर. सचदेवा, पृ.सं.22.
2. https://shabdkosh.raftaar.in/Meaning-of-uchcha%20varga-in-Hindi
3. कृष्णकुमार गोस्वामी, हिंदी का सामाजिक संदर्भ, पृ. 103.
4. गर्ग मृदुला -उसके हिस्से की धूप, पृ.सं.86
5. गर्ग मृदुला -वंशज, पृ.सं.39.
6. गर्ग मृदुला-वंशज, पृ.सं.13
7. गर्ग मृदुला, वंशज, पृ.सं.87.
8. पुष्पा श्रीवास्तव, हिंदी का सामाजिक संदर्भ. पृ.48-49.
9. Palston, National Development and Bilingual Education.
10. गर्ग मृदुला, वंशज, पृ.सं.21.